विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

प्राकृतिक जलवायु समाधानों के क्रियान्वयन बिना पृथ्वी पर जैव विविधता और मानव का संकट टलना असंभव

जलवायु परिवर्तन के कारण ग्लोबलवार्मिंग को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने हेतु पेरिस जलवायु समझौते के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भूमि का बेहतर प्रबंधन अनिवार्य है। लेकिन अभी तक की मानवीय गतिविधियों ने वैश्विक तापमान में 1.25 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि की है, और उत्सर्जन की वर्तमान स्थिति से पता चलता है कि हम 10 वर्षों के पहले ही 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक का तापमान बढ़ा देंगे। हालांकि कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की वैश्विक वृद्धि दर धीमी हुई है और कई देशों ने अपने उत्सर्जन लक्ष्यों को मजबूत किया है, लेकिन वर्तमान शताब्दी के मध्य तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य भी ग्लोबलवार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक तापमान से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए अपर्याप्त है। असल में 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्यों की उपलब्धि के लिये मुख्य बाधाओं की प्रकृति भू-भौतिकीय नहीं है बल्कि हमारी राजनीतिक, सामाजिक और तकनीकी प्रणालियों की जड़ता है। इस जड़ता को दूर करने के लिए ऐसे राजनीतिक और कॉर्पोरेट नेतृत्व दोनों की आवश्यकता है, जो सिस्टम-स्तर और व्यक्तिगत जीवन शैली में बदलाव की आवश्यकता की बढ़ती सामाजिक मान्यता द्वारा समर्थित हो। इस लक्ष्य को प्राप्त करना संभव तो है किन्तु उपलब्ध साक्ष्य अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं देते कि दुनिया 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गंभीरता से प्रतिबद्ध है।

भूमि प्रबंधन हेतु उपलब्ध विकल्पों और उनकी शमन क्षमता के बारे में वैज्ञानिक स्थिति स्पष्ट करने और क्रियान्वयन योग्य बनाने के लिए 'प्राकृतिक जलवायु समाधान' (एनसीएस)परवर्ष 2017 में एक लैंडमार्क पेपर प्रकाशित हुआ था। इस शोधपत्र में संरक्षण, पुनर्स्थापन, और बेहतर भूमि प्रबंधन हेतु 20 प्रकार के विकल्प चिन्हितकिये गए हैं जो कार्बन भंडारण को बढ़ाते हैं और वनों, आर्द्रभूमियों, घास के मैदानों और कृषि भूमि में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को रोकते हैं। एनसीएस की अधिकतम क्षमता 23.8 पेटाग्राम कार्बन डाइऑक्साइड प्रति वर्ष के तुल्य है। यह पिछले अनुमानों से 30प्रतिशत अधिक है। इस अधिकतम का लगभग आधा (11.3 पेटाग्राम कार्बन डाइऑक्साइड प्रति वर्ष के तुल्य) लागत प्रभावी जलवायु शमन है, यह मानते हुए कि वर्ष 2030 तक कार्बन डाइऑक्साइड प्रदूषण की सामाजिक लागत 100 डॉलर प्रति मेगाग्राम कार्बन डाइऑक्साइड तुल्य है। प्राकृतिक जलवायु समाधान आवश्यक लागत प्रभावी कार्बन डाइऑक्साइड शमन का 37 प्रतिशत प्रदान कर सकते हैं और वर्ष 2030 तक तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहने की 66प्रतिशत संभावना है। इस लागत प्रभावी एनसीएस शमन का एक तिहाई 10 डॉलर प्रति मेगाग्राम कार्बन डाइऑक्साइड तुल्य पर या उससे कम पर किया जा सकता है। इन शमन अनुमानों की अनिश्चितता को नियंत्रित करने के लिए शोध जारी है। फिर भी, वर्तमान में उपलब्ध प्रमाण जलवायु परिवर्तन के प्रमुख समाधान के रूप में पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन में सुधार हेतु तत्काल वैश्विक कार्रवाई के लिए ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

प्राकृतिक जलवायु समाधान उन रणनीतियों और कार्यों के एक समूह को संदर्भित करते हैं जो जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रकृति और उसके पारिस्थितिक तंत्र का उपयोग करते हैं। ये समाधान जलवायु परिवर्तन से निपटने में एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में कार्य करने की प्रकृति की शक्ति को पहचानते हैं और प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा, बहाली और टिकाऊ प्रबंधन पर जोर देते हैं। पुनर्वनीकरण, वन संरक्षण, आर्द्रभूमि बहाली और टिकाऊ भूमि प्रबंधन जैसे प्राकृतिक जलवायु समाधानों को लागू करके, हम कार्बन पृथक्करण को बढ़ा सकते हैं, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकते हैं और समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा दे सकते हैं। ये क्रियाएं न केवल कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने और संग्रहीत करने में मदद करती हैं बल्कि जैव-विविधता को संरक्षित करती हैं, पानी की गुणवत्ता में सुधार करती हैं, मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाती हैं और स्थानीय समुदायों को अतिरिक्त लाभ प्रदान करती हैं।

एक बात यहाँ ध्यान रखना आवश्यक है कि नेचुरल क्लाइमेट सल्यूशन ऊर्जा क्षेत्र के डीकार्बोनाइजेशन का विकल्प नहीं है; बल्कि, उत्सर्जन कटौती लक्ष्यों को पूरा करने और उससे आगे बढ़ने में मदद करने के लिए डीकार्बोनाइजेशन प्रयासों केसाथ अनिवार्य रणनीति का हिस्सा हैं।

इस संबंध में क्रियान्वयन को अब और पीछे नहीं टाला जा सकता। कारण यह है कि एनसीएस के सफल होने की संभावना वर्ष 2030 तक अच्छी है किन्तु बाद में, विशेषकर वर्ष 2050 के बाद, काफी हद तक घटने की आशंका है। इसके तीन मुख्य कारण हैं: जैसी कि आशंका है, जलवायु परिवर्तन की प्रतिक्रियाएं धीरे-धीरे पारिस्थितिक तंत्र की जैव-विविधता, मूल संरचना, इकोसिस्टम फंक्शन्स और लचीलेपन को ही कम कर देंगी, जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति द्वारा कार्बन प्रथक्करण और संग्रहीत करने की उनकी क्षमता में भारी कमी आ सकती है। इस बीच, यदि जीवाश्म-ईंधनों से उत्सर्जन में यथावत (बिज़नेसऐजयूजुअल) वृद्धि जारी रही तो एनसीएस की तुलनात्मक प्रभाविता बहुत कम हो जाएगी।

कार्बन चक्र में पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2010 के आंकड़ों के अनुसार लगभग भूमि के ऊपर 308 गीगाटन वैश्विक स्थलीय कार्बन संचित है और इन तंत्रों द्वारा लगभग 8 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड सालाना संचित की जा रही है। सतह के ऊपर संचित कार्बन की हानि के मुख्य कारण वनों की कटाई, वन क्षरण, और अन्य पारिस्थितिक तंत्रों की बर्बादी हैं।

वैश्विक समुदाय लंबे समय से जलवायु परिवर्तन शमन के लक्ष्य निर्धारित कर रहा है, लेकिन कुछ हो नहीं रहा है। अब इन लक्ष्यों को पूरा करने हेतु ठोस क्रियान्वयन का समय आ गया है। हम यहाँ पर इस क्रियान्वयन हेतु एक श्रंखलाबद्ध रूप में प्रमाण-आधारित मार्गदर्शन उन लोगों के लिए प्रदान करेंगे जो अपने नियंत्रणाधीन क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की गति कम करने के लिए प्रकृति की क्षमता का मूल्यांकन करते हुए क्रियान्वयन करना चाहते हैं। यहाँ यह आज स्पष्ट करना आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन और जैव-विविधता हानि जैसी पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में प्रमुख बाधाएँ राजनीतिक हैं। राजनेताओं और निर्णय-कर्ताओं की प्रबल और अटूट प्रतिबद्धता के बिना राजनीतिक परिदृश्य में निहित इन बाधाओं से प्रभावी ढंग से नहीं निपटा जा सकता है।

कार्बन चक्र में पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्ष 2010 के आंकड़ों के अनुसार लगभग भूमि के ऊपर 308 गीगाटन वैश्विक स्थलीय कार्बन संचित है और इन तंत्रों द्वारा लगभग 8 गीगाटन कार्बन डाइऑक्साइड सालाना संचित की जा रही है। सतह के ऊपर संचित कार्बन की हानि के मुख्य कारण वनों की कटाई, वन क्षरण, और अन्य पारिस्थितिक तंत्रों की बर्बादी हैं। इसके उलट वनस्पति में कार्बन सिंक का बढ़ना वन पुनर्स्थापन, वनीकरण और बेहतर वन प्रबंधन और संरक्षण आदि पर निर्भर करता है। कई नीतिगत निर्देश इस बात पर जोर देते हैं कि आवास संरक्षण और पुनर्स्थापन को जैव विविधता संरक्षण और जलवायु परिवर्तन शमन में एक साथ योगदान देते हैं। इनमें संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) और जैवविविधता पर कन्वेंशन (सीबीडी) और संयुक्त राष्ट्रसंघ का पारिस्थितिक तंत्र पुनर्स्थापन दशक आदि के तहत विविध निर्णय शामिल हैं। लक्ष्य निर्धारण और अंतर्राष्ट्रीय रणनीतियों और कार्य योजनाओं के कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि अच्छी तरह से संरक्षित क्षेत्र जैव विविधता के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन शमन जैसी अन्य पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के बीच बढ़िया तालमेल बैठाने में कैसे योगदान करते हैं।

जलवायु परिवर्तन को कम करने की दिशा में वन प्रबंधन और जैव-विविधता हानि को रोकने के लिए वन संरक्षण एक महत्वपूर्ण तंत्र है। संरक्षित क्षेत्र वैश्विक वन संरक्षण प्रयासों की नींव हैं और संयुक्त राष्ट्र एसडीजी को प्राप्त करने में प्रगति निर्धारित करने के लिए संरक्षित क्षेत्रों की प्रभावशीलता की निगरानी महत्वपूर्ण है। हालांकि संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना जैव-विविधता संरक्षण पर केंद्रित है, तथापि, जैव विविधता संरक्षण से कार्बन संरक्षण का स्पष्ट सह-लाभ भी है। विशेषकर पुराने, जैवविविध वन भी प्राय: अधिक कार्बन संग्रहीत करते हैं। संरक्षित क्षेत्र कई क्षेत्रों में वन आवरण के नुकसान को प्रभावी ढंग से रोकने के साथ-साथ तापमान और स्थानीय जलवायु को विनियमित करने और संभावित रूप से कार्बन पृथक्करण क्षमता को बढ़ावा देते हैं। इसलिए संरक्षित क्षेत्रों का विस्तार जलवायु परिवर्तन शमन को बढ़ावा देने का एक उत्तम रास्ता है। अक्षुण्ण वन, विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय वन, वस्तुत: अधिक मानव-प्रभावित वनों और रोपित मोनोकल्चर की तुलना में दोगुना अधिक कार्बन सोख सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि संरक्षित वन क्षेत्र शुद्ध वैश्विक जीएचजी सिंक का एक बड़ा अंश (लगभग 27 प्रतिशत) योगदान करते हैं, लेकिन स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में अबवग्राउंड कार्बन स्टॉक और प्रवाह के परिमाण में बड़ी अनिश्चितताएं बनी हुई हैं। वैश्विक स्तर पर संरक्षित क्षेत्र किस हद तक कार्बन उत्सर्जन से बचने या कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन में योगदान करते हैं, यह अभी तक साफ़ नहीं था। अब हाल में हुई शोध इस बात को स्पष्ट करती है। नासा के जीईडीआई मिशन से सटीक लिडारडेटा का उपयोग करते हुए एक हालिया अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि संरक्षित क्षेत्रों में 61.43 गीगाटन का भारी अबवग्राउंड कार्बन स्टॉक है, जो सभी स्थलीय काष्ठीय कार्बन का लगभग 26 प्रतिशत है। उल्लेखनीय यह भी है कि असुरक्षित वनों की तुलना में संरक्षित क्षेत्र अतिरिक्त 9.65 गीगाटन कार्बन का योगदान करते हैं, जो मुख्य रूप से वनों की कटाई और गिरावट के रुकने से हो रहा है। यह अतिरिक्त कार्बन भंडार लगभग एक वर्ष के वैश्विक जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन के बराबर है। शोध के ये निष्कर्ष भविष्य में कार्बन उत्सर्जन से बचने और कार्बन पृथक्करण को संरक्षित करने के लिए उच्च बायोमास वाले वनों को प्राकृतिक जलवायु समाधान की रणनीति के अनुरूप संरक्षित क्षेत्र घोषित करने की त्वरित आवश्यकता को दर्शित करते हैं (देखें, एल. डनकैसन इत्यादि, नेचरकम्युनिकेशन्स, 14, आर्ट. 2908, 2023)।

आने वाले समय में श्रृंखलाबद्ध रूप से हम प्रत्येक प्राकृतिक जलवायु समाधान का यहां विस्तृत वर्णन करेंगे जो भारत में क्रियान्वित करना आवश्यक है। भारत द्वारा नेशनली डिटरमाइंड कंट्रीब्यूशन के प्रकाश में प्रत्येक समाधान के योगदान पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही भारत के प्रत्येक राज्य में जो महत्वपूर्ण क्रियान्वयन हो रहे हैं या हुए हैं उनको केस स्टडीज के रूप में भी यहां वर्णित किया जाएगा। एक अच्छी बात यह है कि भारत सरकार का वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा सभी राज्य सरकारों के वन एवं पर्यावरण विभागों द्वारा प्राकृतिक जलवायु समाधान की दिशा में गहरी प्रतिबद्धता दर्शित की गई है। सरकारों द्वारा किए जा रहे क्रियान्वयन को प्रमाण-आधारित बनाने के लिए अनेक वैश्विक संस्थान जानकारी साझा करने के लिए तत्पर हैं। ऐसे संस्थानों का यह भी मानना है कि भारत में किये जा रहे क्रियान्वयन विश्व के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। विशेष रूप से द नेचर कंजर्वेन्सी और टेरी स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज के सहयोग से भारत के विभिन्न राज्यों में 16 राउंड टेबल्स और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार के सहयोग से दो राष्ट्रीय कार्यशालाएं भी प्रस्तावित हैं। आशा की जाती है कि ऐसे नवाचारों द्वारा उपलब्ध ज्ञान को उन लोगों तक पहुंचने में मदद मिलेगी जो इस ज्ञान का प्रयोग जमीन पर प्राकृतिक जलवायु समाधानों के क्रियान्वयन हेतु कर सकते हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीपनारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों मेंविजिटिंगप्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

देश में समानता बनाये रखने के लिए भाईचारा बहुत जरूरी है : सीजेआई डी. वाई. चन्द्रचूड

सीजेआई डी. वाई. चन्द्रचूड ने बीकानेर में ई-कोर्ट्स फेज-3 की घोषणा की, ई-कोर्ट्स के जरिए बीकानेर के वकील हाईकोर्ट में वीसी के जरिये पैरवी कर सकेंगे

बीकानेर, (कासं)। देश में समानता बनाये रखने के लिए भाईचारा बहुत जरूरी है। संविधान की भावना के मुताबिक हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। अगर लोग आपस में लड़ेंगे तो देश तरक्की कैसे करेगा। यह बात शनिवार को देश के प्रधान न्यायाधीश डॉ. डी. वाई. चन्द्रचूड ने बीकानेर के एमजीएस विवि. के सभागार में हमारा संविधान हमारा सम्मान रीजनल कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही।

बीकानेर के एमजीएस सभागार में न्याय विभाग की ओर से आयोजित प्रदर्शनी का प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड व केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल आदि ने अवलोकन किया।

- प्रधान न्यायाधीश डॉ. डी. वाई. चन्द्रचूड ने बीकानेर के एमजीएस विवि. के सभागार में ''हमारा संविधान हमारा सम्मान'' रीजनल कार्यक्रम में शिरकत की

प्रधान न्यायाधीश ने बीकानेर में वकीलों के लम्बे समय से आन्दोलन हाईकोर्ट बैंच के एवज में ई-कोर्ट्स की घोषणा की। जिससे बीकानेर के वकील बीकानेर से हाईकोर्ट में वीसी के जरिये पैरवी कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि न्याय विभाग ने ई-कोर्टस फेज-3 के लिए सात हजार करोड़ का बजट प्रदान किया है। इससे ई-कोर्ट्स में वीसी की सुविधा मिलेगी ताकि बीकानेर के वकील हाईकोर्ट में अपनी बहस कर सकें। उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट जयपुर व जोधपुर तक ही नहीं पूरे राज्य तक इसकी पहुंच ई-कोर्ट्स के जरिये हो सकेगी।

समरोह को सम्बोधित करते हुए प्रधान न्यायाधीश डी.वाई. चन्द्रचूड ने कहा कि भारतीय संविधान में आमजन के जीवन में इसका काफी महत्व है। संविधान के जरिये देश में बंधुता भाईचारे को भी बढ़ावा दिया गया है। उन्होंने सवैधानिक अधिकारों के साथ लोगों से दायित्व निर्वहन करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र और संविधान में अटूट संबंध में यह हर व्यक्ति को अधिकारों के साथ कर्तव्य भी प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान एक दस्तावेज है। जिसमें सामान्य सिद्धांतों मानवीय भावनाओं को प्रकट करने का प्रावधान एक साथ मिलता है। शनिवार को बीकानेर आये भारत के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ ने कहा है कि न्याय सबके लिए समान रूप से होना चाहिए। भारत के अलग-अलग राज्यों के कौने-कौने में बैठे भारतीय को न्याय मिले, यही सुप्रीम कोर्ट की अवधारणा है। सीजेआई ने कहा कि भारत के संविधान निर्माण में बीकानेर का बड़ा योगदान रहा है। संविधान सभा के 284 सदस्यों में एक बीकानेर के जसवंत सिंह थे। इसके अलावा बीकानेर के महाराजा गंगासिंह प्रिंसेस चैम्बर के चांसलर रहे। संविधान केवल वकीलों का दस्तावेज नहीं है। इसकी आत्मा कई युगों की भावना है।

उन्होंने कहा कि संविधान से हमें कई अधिकार मिले हैं और यह कोर्ट से लेकर गांव के चबूतरों तक अपना स्थान रखता है। उन्होंने कहा कि देश के किसी भी कोर्ट में स्थानीय भाषा में फैसला होना चाहिए। अगर मैं दिल्ली में बैठकर कोई निर्णय वकील के लिए, जज के लिए दे रहा हूं तो वो कठिन भाषा में हो सकता है। लेकिन अगर मैं आम आदमी के लिए निर्णय कर रहा हूं तो निश्चित रूप से सरल भाषा में होना चाहिए। देश के जिला स्तर के कोर्ट की बिल्डिंग में सुधार होना चाहिए। ये बिल्डिंग आधुनिक स्तर की होनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने सीजेआई डी. वाई. चन्द्रचूड के बीकानेर आने पर स्वागत करते हुए कहा कि यह बीकानेर के लिए गर्व का पल है। जब भारत के प्रधान न्यायाधीश बीकानेर में है। मेघवाल ने सुप्रीम कोर्ट में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की वकील की वेशभूषा में मूर्ति लगाने पर भी सीजेआई का आभार व्यक्त किया। मेघवाल ने यहां से भारत के पांच सौ आकांक्षी ब्लाकों में न्याय सहायक कार्यक्रम की शुरूआत की। न्याय सहायक जिले व ग्रामीण स्तर पर न्याय से वंचित लोगों के घरों तक जाकर उन्हें न्याय दिलाने में सहयोग करेंगे। उन्होंने न्याय विभाग की ओर से न्याय बंधु, न्याय सेतु व दिशा कार्यक्रम के जरिये न्याय विभाग की ओर से चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि न्याय विभाग अंतिम पंक्ति में बैठे व्यक्ति तक न्याय पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। समारोह में चीफ जस्टिस ऑफ राजस्थान मनिंदर मोहन श्रीवास्तव, राजस्थान सरकार के कानून मंत्री जोगाराम और विश्वविद्यालय के कुलपति मनोज दीक्षित अतिथि के रूप में मौजूद थे। सबसे पहले बटन दबाकर डॉ. चंद्रचूड और कानून मंत्री मेघवाल ने अभियान का आगाज किया। कार्यक्रम में जिला मजिस्ट्रेट देवेन्द्र शमा समेत तमाम न्यायिक अधिकारी और जिलेभर के अधिवक्ता समारोह में शामिल हुए।

भारत और जापान के बीच सैन्य अभ्यास ''धर्मा गार्डियन'' का समापन

दोनों देशों के 40 सैनिकों ने 48 घंटे तक लगातार सैन्य अभ्यास किया

बीकानेर, (निसं)। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में भारत और जापान के बीच सैन्य अभ्यास ''धर्मा गार्डियन'' का समापन हुआ। इससे पहले 48 घंटे तक लगातार अभ्यास किया।

- जापान की 34वीं इन्फेंट्री रेजीमेंट तथा भारत की 19वीं राजपूताना राइफल्स बटालियन के सैनिकों ने भाग लिया

दोनों देशों के 40 सैनिकों के फायरिंग, ऑपरेशनल गतिविधि, आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन और युद्ध के दौरान दुश्मन पर हमला करने का अभ्यास किया गया। इस दौरान डॉग स्क्वायड के श्वानों का भी इस्तेमाल किया गया। 25 फरवरी से शुरू हुआ यह अभ्यास 8 मार्च तक चला इसमें जापान की 34वीं इन्फेंट्री रेजीमेंट तथा भारत की 19वीं राजपूताना राइफल्स बटालियन के सैनिकों ने भाग लिया। 14 दिन चले दोनों सेनाओं के अभ्यास में इंटर ऑपरेटिंग और युद्ध लड़ने की क्षमताओं से एक-दूसरे को परिचित कराया गया। इसमें भारत की राजपुताना राइफल्स बटालियन और जापान के 40 सैनिकों का समूह शामिल हुआ। समापन के दिन आतंकियों पर सेना की कार्रवाई के लाइव प्रदर्शन से दर्शाया गया कि दोनों देशों की तकनीक, रणनीतिक क्षमता और ताकत के सामने आतंकियों के मंसूबे कभी कामयाब नहीं हो सकते। सैन्य ऑपरेशन में डॉग एलन और बोलो का आतंकियों पर हमला कर हथियार छीनकर सैनिकों तक पहुंचाने का नजारा रोंगटे खड़े कर देने वाला था। डिफेन्स पीआरओ कर्नल अमिताभ शर्मा ने बताया कि संयुक्त अभ्यास के पहले सात दिन कॉम्बैट कंडीशनिंग और कार्यनीतिक प्रशिक्षण पर केंद्रित रहे। बाद के सात दिनों के दूसरे चरण में यहां अर्जित कौशल को लागू किया गया। भारत की राजपुताना राइफल्स बटालियन और जापान के 40 सैनिकों का समूह शामिल रहा। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज शुक्रवार को बम के धमाकों के साथ उठते आग के गोलों और सैनिकों की राइफल से दुश्मन पर गोलियों की बौछार से गूंज उठी।

गोवंश के मुंह में पोटाश से ब्लास्ट, कई गायों की मौत

घटना को लेकर ग्रामीणों व जीव प्रेमियों ने रोष जताया, पुलिस मौके पर पहुंची

बीकानेर, (निसं)। बज्जू उपखंड क्षेत्र में पशुओं के साथ पशु क्रूरता का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा है। सीमावर्ती बरसलपुर गांव की रोही में पशुओं के मुंह में पोटाश से ब्लास्ट से 2-3 गोवंश की मौत हो गई। इस घटना को लेकर ग्रामीणों व जीव प्रेमियों ने रोष जताया।

- ब्लास्ट होने से घायल हुये गोवंश का उपचार जारी, प्रशासन से कार्रवाई करने की मांग

घटना स्थल पर बड़ी संख्या में ग्रामीण एकत्र होने पर रणजीतपुरा पुलिस मौके पर पहुंची और मेडिकल बोर्ड से पशुओं का पोस्टमार्टम करवाया गया। मौके पर बरसलपुर सरपंच थारूराम मेघवाल, सामाजिक कार्यकर्ता कैलाश चंदेल, पन्नालाल चंदेल, पुन्नू खां सीताराम, रामसिंह सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे और घटना पर विरोध जताया।

जीव प्रेमियों ने बताया कि घटना का तब पता चला, जब पशुपालक की गाय घर आई और उसका मुंह ब्लास्ट से फटा था। इसके बाद रोही में अन्य कई पशुओं की ब्लास्ट से मौत हो चुकी थी। ग्रामीणों ने बताया कि सभी पशुओं की मौत मुंह में ब्लास्ट होने से हुई है। वहीं ब्लास्ट से घायल गोवंश का उपचार चल रहा है। घटना को लेकर देहात कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष श्यामसिंह भाटी ने कहा कि ऐसी घटनाओं को लेकर जीव प्रेमियों में रोष बढ़ता जा रहा है। यदि जल्द आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया, तो आंदोलन किया जाएगा। घटना को लेकर जीव प्रेमी सुरेश तेतरवाल, सुनील गोदारा, श्रवण पूनियां, मांगीलाल खीचड़, कैलाश चंदेल सहित लोगों ने रोष जताया और प्रशासन से कार्रवाई करने की मांग रखी।

हेड कांस्टेबल गोकुलराम ने बताया कि पशुपालक सीताराम मेघवाल ने मामला दर्ज करवाया कि उसकी गाय रोही में विचरण करने गई थी। जब वापस लौटी, तो दर्द से कहरा रही थी व उसका मुंह फट चुका था। उसका इलाज करवाया, लेकिन बच नहीं पाई। इस पर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मामले की जांच थानाधिकारी चंद्रजीतसिंह कर रहे हैं।

क्षेत्र में इस तरह का यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी पशु क्रूरता के मामले आरडी 860 पर देखे जा चुके है। फरवरी 2021 में लगातार कई दिनों तक ऐसे मामले सामने आए थे। इसके विरोध में जीव प्रेमियों ने बाजार बंद व सड़क पर जाम लगा कर धरना शुरू कर दिया था। इसके बाद बीकानेर से बम निरोधक दल भी पहुंचा था और प्रशासन के अधिकारियों को कई दिन तक परेड करनी पड़ी थी। यहां एक दर्जन से ज्यादा पशुओं की मौत हो गई थी। आरडी 860 में पूर्व में भी इसी तरह के मामले सामने आ चुके हैं। उस समय सुअरों के मांस के लिए कुछ शिकारी प्रवृत्ति के लोग ऐसा करते थे। ये लोग आटे की गोलियां बनाकर उसमें पोटाश भर देते थे और सुअरों की पगडंडी में गड्ढा खोदकर छिपा देते थे। कई बार पशुओं के पैरों से यह गोली ऊपर आ जाती थी। इस आटे की गोली को पशुधन खा लेता था और मुंह में ब्लास्ट हो जाता है, जिससे पशुधन की तड़प-तड़प कर मौत हो जाती है।

राशिफल रविवार 10 मार्च, 2024

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, रविवार, विक्रम संवत 2080, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र रात्रि 1:55 तक, साध्य योग सांय 4:13 तक, नाग करण दिन 2:30 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:40 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मकर, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 1:55 सूर्योदय तक है। आज देवपितृकार्य अमावस्या, शिव खप्पर पूजा, मन्वादि, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:13 से 9:41 तक, लाभ-अमृत 9:41 से 12:37 तक, शुभ 2:05 से 3:33 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 6:24

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आज व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। उचित परामर्श मिलेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। मन:स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृश्चिक
घर-परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। परिजनों के व्यवहार के कारण अपमानित होना पड़ सकता है। परिवार में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मीन
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।